मेराज का सफर और उसकी हिकमत

हजरत पिर जुलफिकर नकश्बंदी दब.

हवाला- खुतबाते ज़ुल्फकार फकीर हिन्दी/१

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

इस्लामी महिनो मे कुर्बानीया

इस्लामी साल की सूरूवात मुहर्रम से हूवी इस महीने मे कुर्बानी की यादे ताजा होती हे, हजरत इब्राहीमअल को १० मोहररम के दिन आग मे डाला गया हजरत हूसेनरदी को १० मुहर्रम के दिन सजदे की हालत मे शहीद किया गया इस्लामी साल जिलहिजा पर खतम होता हे उसमे भी कुर्बानीया हे इस महीने मे हजरत इस्माइलअल ने कुर्बानी दी अल्लाह ने उनके बदले ऐक जानवर को कुर्बानी के लिये कबूल कर लिया. तो इस्लामी साल के शूरू मे भी कूर्बानी और आखिर मे भी कूर्बानी.

अगर इस्लामी साल का दरमियान देखे तो रजब का महिना आता हे ये महीना इन्सानीयत की शराफत और

बूलंदी के जाहीर होने का महिना हे इसकी २७ वी रात को **अल्लाह** ने अपने **मेहबूब**ﷺ को अपने पास अर्स से उपर बूलाया और वो मकाम अता किया के फरिश्ते भी हेरान रेह गये फिर साल का जो पेहला आधा हिस्सा हे उसमे **अल्लाह** ने रबीउल अव्वल के महीने मे **हुजुर**ﷺ की विलादत मुबारक फरमाई और जो दुसरा आधा हिस्सा हे उसको **अल्लाह** ने रमजान के जरीया सआदत अता फरमाई तो पूरे इस्लामी साल मे कूछ महीने और कूछ दिन **अल्लाह** की तरफ से खुसुसी रहमतो वाले हे.

सफर इसरा

हुजुरﷺ ताइफ से वापस तशरीफ लाये तो आप का गम और ज्यादा हो गया **आप**ﷺ के दिल मे बेचेनी और बढ गई क्यु के अपनो का सुलुक भी देख लिया और गैरो का भी सुलुक देख लिया और दुश्मनो ने तो **आप**ﷺ को तकलीफ पोहचाने मे वो सब कूछ कर दिया जो वो कर सकते थे.

हजरत जिब्रिलअल की आमद

हुजुरﷺ इस गम की हालत मे हजरत उम्मे हानीरदी के घर तशरीफ ले गये और ऐक अजीब दुआ मांगी फरमाया काश मेरा कोई दोस्त होता जो मेरा साथ देता मेरा कोई रफीक होता जो मेरी गम्ख्वारी करता कोई

मेरा यार होता जो मेरी दिलदारी करता हुजुरﷺ की जबान से ये लफ्ज नीकले और इसी गम मे आपﷺ सो गये अभी रात का वकत था और आप सोऐ हूवे थे के जिब्रिलअल ने हाजीर होकर अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसुलﷺ अल्लाह आप की तरफ सलाम भेजते हे और आप को अपनी तरफ दावत देते हे हुजुरﷺ ने बहोत खुश होकर हजरत जिब्रिलअल को देखा और सलाम का जवाब दिया हजरत जिब्रिलअल ने दुसरा जुमला फिर कहा ऐ अल्लाह के मेहबूबﷺ आप का रब आपकी मुलाकात के लिये बदा बेताब हे तो आपﷺ बाहर तशरीफ ले आये वहा आपका सीना मुबारक खोला गया और आपके दिल मुबारक को खोल कर अल्लाह की खुसुसी रहमतो से भर दिया गया जेसे हम लोगो को नमाज से पेहले अल्लाह ने वुजु का हूकम दिया हे उस फखरे इन्सानियत की ये नमाज थी जिसके लिये अल्लाह ने उनके दिल का वुजु करवाया उनके दिल को धो दिया गया यहां तक की हुजुरﷺ ने वहा नमाज अदा फरमाई फिर आपﷺ को वहा से लेकर आगे पोहचाया गया.

सफर की सूरूवात

हूजुरﷺ के लिये जो सवारी लायी गई थी उसके बारे मे

हजरत जिब्रिलअल ने बतलाया के ऐ अल्लाह के मेहबूबﷺ इसका नाम बूराका हे बूराका बर्क से बना हे, ऐसी सवारी जो बीजली की सी तेजी से चले. हूजुरﷺ बूराका पर सवार हूवे और बैतुल हराम से बैतूल मक्दीस की तरफ चले हजरत जिब्रिलअल ने आप को बताया के ऐ अल्लाह के मेहबूबﷺ ये रहमत व बरकत की वादी हे हूजुरﷺ ने वहा भी नमाज अदा फरमाई फिर जब आपﷺ तशरीफ ले गये तो रास्ते मे 'तूर' पहाद पर भी आप का थोडी देर ठेरना हूवा फिर आपﷺ मस्जीदे अक्सा तशरीफ ले गये.

मस्जीद मे नबीयो की इमामत

हूजुरﷺ देखते हे की मस्जीदे अक्सा मे तमाम के तमाम नबी मौजुद हे सफ बंधी हूवी हे हजरत जिब्रिलअल अर्ज करते हे ऐ अल्लाह के मेहबूबﷺ मुक्तदी तो सफो मे खडे हो चुके हे इमाम की जरूरत हे आपﷺ तशरीफ लाये और इमामत फरमाये ताके सब के सब नबी आप के पीछे नमाज अदा कर सके तो आप ने वहा पर नमाज पढाई इस तरह अल्लाह ने आप को तमाम नबीयो का इमाम बना दिया.

मेराज का सफर

जब आपﷺ ने नमाज अदा कर ली तो आप को ऐक और सवारी पेश की गई, हदीसो मे उसका नाम रफारफ आता हे, रफारफ का उर्दु तरजुमा हे उचाई की तरफ ले जाने वाली सीळी, और इंगलीश मे उसका तरजुमा लीफ्ट (ऐलीवेतर) बनेगा, ये दुसरी सवारी लीफ्ट के जेसी थी, जिस मे इन्सान अगर सवार हो जाये तो वो इन्सान को बूलंदीयो की तरफ ले जाती हे, बूराका आपﷺ को मक्का से मस्जीदे अक्सा तक पोहचाता हे, और रफारफ आपﷺ को वहा से आसमान की बूलंदीयो तक पोहचाता हे, इस सफर के पेहले हिस्से को अरबी मे इसरा कहा जता हे, इसरा का मतलब रात को सफर करना हे, सफर के दुसरे हिस्से को मेराज कहा जता हे, मेराज का मतलब हे उचाई और बूलंदी की तरफ जाना हे, मेराज उरूज से हे, यानी आपﷺ को वहा से उरूज नसीब हूवा, हजरत जिब्रिलअल आपﷺ के साथ थे, उपर गये यहां तक के सातो आसमानो से होते हूवे अर्स से उपर तशरीफ ले गये, आपﷺ को रास्ते मे बहोत सी अजीब चीजे दिखायी गई, ऐक जगाह वो भी आयी जहां 'लौहो कलम' थे, हुजुरﷺ ने उसको भी अपनी आंखो से देखा, फरिश्तो को भी देखा जो वहा बेठे हूवे

आमाल के अजरो सवाब वहा पर लीख रहे थे, उनके कलमो की आवाज को भी हुजुरﷺ ने अपने कानो से सुना, फिर आपﷺ को वहा पर जन्नत और जहन्नम के मनाजीर दिखाये गये.

जन्नत के मनाजीर

रिवायत मे आता हे के हूजुरﷺ ने जन्नत के मंजर को देखा के कूछ लोगो ने खेती की, उनकी खेती उसी वकत पककर तय्यार हो गई, वो उसको काटते हे, दोबारा उनकी खेती फिर बळी हो जाती हे, तो आपﷺ ने जिब्रिलअल से पूछा के ये क्यां मामला हे? अर्ज किया, ऐ अल्लाह के मेहबूबﷺ ये नेक लोगो की मिसाल हे जिन्होने नेक अमल किये वो अपने आमाल का बदला पाते हे, जिन्दगी मे उसकी बरकते उनको बार बार मिलती रेहती हे, तभी आपﷺ ने सुना के किसी के कदमो की आवाज आ रही हे, तो अल्लाह के मेहबूबﷺ बळे हेरान हूवे, पूछा जिब्रिल सेअल ये किस के चलने की आवाज हे, अर्ज किया, अल्लाह के मेहबूबﷺ ऐ आपके गुलाम बिलालरदी के जमीन पर चलने की आवाज हे, तो आपﷺ ने पूछा कदमो की आहत यहां कयुं सुनाई जा रही हे, अर्ज किया, अल्लाह के मेहबूबﷺ आपका गुलाम

बिलालरदी अल्लाह के यहां इतनी कबूलीयत का दरजा रखता हे और अल्लाह को इतना पसंदीदा हे के फर्श पर उसके कदम पडते हे और अर्स पर उसके कदमो की आहत सुनाई देती हे, अल्लाह ने आपﷺ को अपने गुलामो के भी मकाम दिखा दिये.

जहन्नम के मनाजीर

फिर आपﷺ को जहन्नम के कूछ गुनहगारों के मनाजीर दिखाये गये.

जिनके होंट काटे जा रहे हे- हुजुरﷺ ने देखा के कूछ लोग ऐसे हे के जिनके होंट काटे जा रहे हे, ऐक फरिश्ता केंची लेकर खडा हे, लोगो के होंट ऊंटो के जेसे लंबे और लटक रहे हे, और इन होंटो को फरिश्ते काटते चले जा रहे हे, पूछा ऐ जिब्रिल ये कया मामला हे? अर्ज किया ऐ अल्लाह के मेहबूबﷺ ये वो लोग हे जो दुनिया मे फितना फेलाने वाले थे, और ऐसी बाते किया करते थे जिस से लोगो मे फितने फेलते थे, सुनी सुनाई बातो पर यकीन करके दुसरो से बदगुमांनी शूरू कर देते थे, इस लिये इनके होंटो को फरिश्ते केंची से कतर रहे हे.

फिरका परस्तो का अंजाम- फिर हुजुरﷺ ने देखा के फरिश्ते ऐक आदमी का गला दबा रहे हे और छोड देते हे

ऐसा कई मरतबा होता हे हुजुरﷺ ने फरमाया जिब्रिल क्यां मामला हे? जवाब दिया अल्लाह के मेहबूबﷺ ये आपकी उम्मत के वो मुक़रीर हे जो उम्मत को टुकडो मे बाट दिया करते थे आज इनके गले को इसलिये दबाया जा रहा हे के तुम्हे अल्लाह ने बोलने की ताकत इसलिये तो नही दी थी के उम्मत को जमा करने के बजाये टुकडे टुकडे कर देते थे.

जुठी गवाही देने वालो का अंजाम- फिर हुजुरﷺ ने देखा के कूछ लोग ऐसे हे के उनका जिस्म तो इन्सानो जेसा हे, मगर उनका चेहरा सुव्वर के जेसा हे, हेरान होकर पूछा जिब्रिल से ये क्या मामला हे? अर्ज किया अल्लाह के मेहबूबﷺ ये झूठी बातो की गवाही देने वाले लोग थे.

शोहर के साथ बदसुलुकी करने की सजा- हुजुरﷺ ने देखा के कूछ औरते कूत्तो की तरह चिखती हे रोती चिल्लाती हे, बिखरे बाल हे, बूरा हाल हे हुजुरﷺ ने पूछा जिब्रिल से ये कौन हे? फरमाया अल्लाह के मेहबूबﷺ ये वो औरते हे जो दुनिया मे अपने शोहरो के साथ हूज्जत करती थी.

ताक्ब्बुर करने वालो का अंजाम- फिर हुजुरﷺ ने देखा के कूछ लोग ऐसे हे के उनके कद छोटे हे और उनके

उपर पहाड रखा जाता हे, और वो कूचले जाते हे, फिर उनके कद ठीक हो जाते हे, ये मामला कई मर्तबा होता हे, पूछा जिब्रिल से ये क्या हे? फरमाया अल्लाह के मेहबूबﷺ ये आप की उम्मत के ताक्ब्बुर करने वाले हे, यानी ये वो लोग हे अपने आप को बदा समजते थे.

खयानत करने वालो का अंजाम- फिर हुजुरﷺ ने देखा के कूछ लोग ऐसे हे के जिनके सर पर बडे बडे गठठे रखे हूवे हे, और वो उसका वजन नही उठा पा रहे हे, वो वजन की वजह से गिरते हे, फरिश्ते वजन उठा कर उनके सर पर रख देते हे, पूछा जिब्रिल से ये क्या हे? फरमाया अल्लाह के मेहबूबﷺ ये आप की उम्मत के वो लोग हे जो अमानत मे खयानत करने वाले थे ये मामला कई मर्तबा होता हे.

बेनमाजी का अंजाम- फिर हुजुरﷺ ने देखा के कूछ लोग ऐसे हे के जिनके सर पर पथ्थर मारे जाते हे और उनका सर कूचल दिया जता हे वो तकलीफ उठाने के बाद ठीक हो जाते हे ये मामला कई मर्तबा होता हे पूछा जिब्रिल से ये क्या हे? फरमाया अल्लाह के मेहबूबﷺ ये आप की उम्मत के बेनमाजी हे.

झीनाकारी का अंजाम- हुजुरﷺ ने देखा के कूछ लोग ऐसे हे के जिनके सर के उपर शरमगाहे हे जिन से पीप निकल रहा हे वो इसको पी रहे हे पूछा जिब्रिल से ये कौन हे? फरमाया अल्लाह के मेहबूबﷺ ये आप की उम्मत के झीनाकार मर्द और औरते हे.

गीबत करने वालो का अंजाम- कूछ लोग ऐसे थे जो अपना गोश्त काट कर खा रहे थे, पूछा जिब्रिल से ये कौन हे? फरमाया अल्लाह के मेहबूबﷺ ये आप की उम्मत के गीबत करने वाले लोग हे आज इन्ही का गोश्त काट कर इनको खिलाया जा रहा हे ये दुनिया मे अपने भाईयो की गीबत किया करते थे.

आगे का सफर

फिर हुजुरﷺ इससे भी ज्यादा बूलंदी अता की गई यहां तक के अर्स के उपर जाने के लिये ऐक ऐसी जगह आयी जहा जिब्रिल भी रुक गये, अर्ज किया ऐ अल्लाह के मेहबूबﷺ यहां तक मेरा साथ था, इससे आगे अल्लाह के जलाल का ये हाल हे के मे अगर ऐक कदम भी आगे बदाऊ तो मेरे पर जल जायेंगे.

सिद्रतुल मुन्तहा के हालात

जब हुजुरﷺ मेराज पर तशरीफ ले गये तो उस वकत सिद्रतुल मुन्तहा पर ऐेक खास किस्म के अनवार व तजल्लीयात आ रहे थे और दरख्त के पत्तो पर सुनेहरे परवाने जगमगा रहे थे हुजुरﷺ ने फरमाया मखलुक मे से कोई भी उसके हूस्न व खुबसुरती की तारीफ बयान नही कर सकता जो उस वकत सिद्रतुल मुन्तहा पर थी अल्लाह का इरशाद हे जब ढापं लिया सिद्र 'बेरी' को उस चीज ने जिसने ढापं लिया. ये आपﷺ का देखना बहोत साफ था मगर आपﷺ गेर जरूरी तौर पर इधर उधर नही देखा अल्लाह का इरशाद हे न तो निगाह इधर उधर हूवी और न हद से आगे बडी आप ने बहोत ही इत्मीनान के साथ उस हालत को देखा अल्लाह का ईर्शाद हे तेहकीक आप ने अपने परवरदीगर की बडी बडी नीशानीया देखी. 'सुरे नज्म' सिद्र 'बेरी' के दरख्त को केहते हे कूछ रीवायतो से पता चालता हे के इस बेरी की जडे छ्त्ते आसमान पर हे और उसकी शाखे और डाले आसमान से आगे नीकली हूवी हे उस दरख्त के हर पत्ते पर फरीशते तस्बीह करते हे इस दरख्त का यह नाम रखने की वजह सही मुस्लिम मे इस तरह है कि हूजुरﷺ ने इरशाद फरमाया कि उपर से जो अहकाम

नाजिल होते हे वह इसी पर मुन्तहा हो जाते हे और बन्दों के आमाल नीचे से उपर जाते हे वह वहां पर ठहरे जाते हे यानी आने वाले अहकाम पहले वहां आते हे फिर वहां से नाजिल होते हे, और नीचे से जाने वाले जो आमाल हे वह वहां ठहरे जाते हे फिर उपर उठाऐ जाते हे. यानी युं केह सकते हे के इस दरख्त को इन्सानी किस्म के साथ ऐक खास किस्म का तअल्लुक हे इसी वास्ते हदीस मे आता हे के मय्यत को गुसल देने के लिये पानी मे बेरी के पत्ते डाल लिया करो.

चार नेहरे

हुजुरﷺ ने फरमाया के मेराज के मोके पर मेने इस दरख्त की जड मे चार नेहरे देखी, मेने जिब्रिल से पूछा के ये नेहरे केसी हे, तो उन्होने बताया के दो नेहरे कौसर और सलसबील हे, जिनका जिक्र कूरान मे हे, कयामत के दिन इसी कौसर का पानी परनालो के जरीये हौजे कौसर मे डाला जायेगा, जो हुजुरﷺ अपने उम्म्तीयो को पीलायेंगे. बाकी दो नेहरे दरिया ये नील व फूरात के साथ तअल्लुक रखती हे.

नमाज का तोहफा

जब दोस्त किसी दोस्त से मिलने जता हे तो बाद मे

तोहफा लेकर वापस जता हे, **अल्लाह** ने फरमाया मेरे महबूब आप इस तमाम बात चीत को तोहफा समजीये, और अपनी उम्मत को कहीये के ५० नमाजे पढे और उसके जरीये मुज से बात किया करे, **आपﷺ** वापस हूवे तो रास्ते मे हजरत मुसाअल से मुलाकात हूवी पूछा **अल्लाह** के महबूब क्या मामला हूवा, फरमाया मुजे नमाजो का हूकम अता किया गया, अर्ज किया मेरी उम्मत को भी इसी तरह का हूकम था मगर वो थोडा भी न कर सकी, आप फिर तशरीफ ले जाये, आप फिर तशरीफ ले गये, और फिर **अल्लाह** के दरबार मे हजरी दी, **अल्लाह** ने ४५ कर दी, और इसी तरह ५-५ नमाजे कम होती गई ९ मरतबा आप को बूलंदी नसीब हूवी, जहिर मे नजर आता हे के नमाजे माफ हो रही हे, मगर हकीकत ये थी के **अल्लाह** ये दिखाना चाहते थे के कल को कोई ये ऐतेराज न कर सके के बूलंदी ऐक ही मरतबा नसीब हूवी, बलके मेहबूब तो जीतनी दफा चाहे मेरे पास आ सकता हे, मे ने रहमत के दरवाजे खोल दिये हे, ९ वी मर्तबा के बाद आप फरमाते हे के मुजे **अल्लाह** से हया आती हे के मे फिर जाउ, अब तो शिर्फ ५ नमाजे हे, तो ५ नमाजो का तोहफा लेकर **अल्लाह** के महबूब वापस तशरीफ लाये.

मेराज मे पूरी काइनात के निजाम का रूक जाना

जब हुजुरﷺ मेराज से वापस तशरीफ लाये तो आप ने फरमाया के मे अपने घर पोहचा तो क्यां देखता हुं के जिस पाणी से वुजु किया था वो इसी तरह बेह रहा हे, बिस्तर की गरमी भी मुजे इसी तरह मेहसुस हूवी, दर हकीकत जीतना वकत वहा लगा था, अल्लाह ने पूरी काइनात के निजाम को उसी जगाह रोक दिया था, जब आपﷺ तशरीफ ले गये थे, आप काइनात की जान व अरमान थे, जब आप तशरीफ ले गये तो अल्लाह ने पूरी काइनात के निजाम को वही रोक दिया, जब आप अल्लाह से मुलाकात करके वापस तशरीफ लाये तो फिर वही से निजाम आगे चला.

न्यु सायन्स इस्लाम की चोखट पर

ऐक वकत था जब तखते सुलेमानी के उडना नही समज सकती थी, आज हवाई जहाज का उडना तखते सुलेमानी के उडने को आछी तरह समजा दिया, ऐक वकत था जब अबाबीलो की कांकरिया जो हाथियो को भूसा बना कर रख देने वली थी, वो इन्सान को हेरान कर देती थी के कांकरिया मे कहा इतनी ताकत के हाथी को मार सके, आज राईफल की गोली ने बात साफ

करदी के किस तरह राईफल की गोली से इतना बदा हाथी मर जता हे, इसी तरह आज लिफ्ट मे सफर करने वालो के लिये रफारफ का समजना ज्यादा आसन हे, आज बूराक के लफ्ज को बर्क यानी बिजली की वजह से समजना ज्यादा आसन हे, जो ऐक सेकंड मे ऐक लाख छीयासी हजार मील का सफर कर जाती हे, **अल्लाह** ने अपने **मेहबूब**ﷺ को थोडी देर मे ये तमाम शर्फ अता फरमादिया जाहिर मे कोई इसे समजे या न समजे, हम इस पर इमान रखते हे के **अल्लाह** के मेहबूब ने फरमाया, इस लिये हमारा पक्का इमान हे के **अल्लाह** के मेहबूब तशरीफ ले गये थे, और आप ने तमाम मनाजीर देखे, और देख कर वापस तशरीफ ले आये.

कूरेशे मक्का की हेरानी

जब **आप**ﷺ मेराज से वापस तशरी लाये तो अगले दिन **आप**ﷺ कूरेशे मक्का को ये सारा वाकिया सुनाया वह बडे हेरान हूवे, सोचने लगे इतनी थोडी देर मे कोई मस्जीदे अक्सा तक केसे पोहोंच सकता हे, और वापस आ सकता हे? इस लिये उन्होने इस बात को हकीकत के खिलाफ समजा, **आप**ﷺ खडे हूवे हे, कूरेशे मक्का पास ही हे, **आप**ﷺ ने मेराज के मुताल्लिक ईरशाद फरमाया तो

कूरेशे मक्का केहने लगे आछा अगर आप मस्जीदे अक्सा हो कर आये हे तो बताये के उसकी छत की कडिया केसी थी? हुजुरﷺ फरमाते हे के मुजे तो छत की कडियो के मुताल्लिक पता ही नही था, मेरी तबियत मे ऐक अजीब सी हालत पेदा हूवी के इन कूफ्फार ने ऐसा सवाल किया के मुजे इस वकत इसका जवाब मालुम ही नही, मगर मेरे रब ने मेरी रेहनुमाई फरमाई, और दरमियान के सरे परदे हटा दिये, मे मस्जीदे अक्सा की छत को देखता था और जो कूछ कूफ्फार पूछते जाते मे उनको बताता जता था, जब मेने उनको सारी बाते बतादी तो उनके मुकद्दर मे हिदायत तो फिर भी नही थी, केहने लगे ये बदा जादुगर हे, ऐ अपने जादु के जरीऐ से बाते बता देता हे.

हजरत अबू बककररदी की गवाही

अबू जहल वहा से उठ कर घर की तरफ चल पडा तो आगे हजरत अबू बककररदी आ रहे थे, केहता हे ऐ अबू बककररदी तुम तो बडे अकलमंद और समजदार हो, मुजे ऐक बात तो बता दो, अगर कोई आदमी ये कहे के मे मक्का से चला और रात ही रात मे मस्जीदे अक्सा तक पोहंचा, फिर वापस आ गया, तो क्यां ये हो

सकता हे? हजरत अबू बककरर्दी ने कहा ये तो मुमकीन नही हे, केहने लगा आप ही के दोस्त केहते हे के मे रात मे ये सफर करके आया हू, हजरत अबू बककरर्दी तडप कर बोलते हे, अगर मेरे मेहबूब फरमाते हे तो मे गवाही देता हुं, के वो सच केहते हे, यकीनन उनके साथ ये मामला पेश आया होगा, **अल्लाह** को हजरत अबू बककरर्दी की ये गवाही इतनी पसंद आयी के हजरत अबू बककरर्दी के नाम के साथ सिद्दीक का लकब लगा दिया, कयामत तक के लिये हजरत अबू बककरर्दी का नाम लिया जायेगा तो उनको सिद्दीक केह कर पुकारा जायेगा, **अल्लाह** के मेहबूब ने ऐक दावा फरमाया था हजरत अबू बककरर्दी ने बिन देखे उसकी गवाही दी थी.

वाकिया ऐ मेराज की कूछ हिक्मते

{1} **अल्लाह** इससे पेहले अपने **महबूब**ﷺ से हजरत जिब्रिलअल के वास्ते से बात चीत किया करते थे, तो **अल्लाह** ने अपने महबूब को अर्स पर बूला लिया, मेराज मे ऐक हिकमत ये थी के **अल्लाह** ने अपने महबूब से बगैर वास्ते के बात चीत की, और उनको इतना कूर्ब और नजदीकी अता फरमाई.

{2} हुजुरﷺ जिस तरह इन्सानो के लिये रहमत थे, इसी तरह वह फरिश्तो के लिये भी रहमत थे, तो दुनिया की मखलुक ने तो आपका रहमतुल लिलआलमीन होना देख लिया था, अब अर्स के रेहने वाले फरिश्ते भी उनका दीदार करले, इसलिये अल्लाह ने अपने महबूब को मेराज अता फरमाई ताके फरिश्ते भी हुजुरﷺ के दीदार से फायदा उठ सके.

{3} अल्लाह को फरिश्तो पर अपने महबूब की बूलंदी साबित करनी थी के तुम्हे अपनी बूलंदी पर फखर और नाज न होना चाहिये, इसलिये मे अपने महबूब को इतना उंचा बूलाता हुं के, जिब्रिल भी नीचे रेह जाते हे, इस तरह अल्लाह ने अपने महबूब को बूलंदी अता फरमा कर फरिश्तो के फखर या नाज को तोड कर रख दिया के, देखो मेरे महबूब को क्या शान अता फरमाई गई.

{4} जब हुजुरﷺ मक्का से चले तो वहां पर तो आपﷺ शिर्फ इन्सानो के इमाम थे, जब आप मस्जीदे अक्सा गये, तो आप नबीयो के ईमाम बन गये, जब आप अर्स पर तशरीफ ले गये तो आप फरिश्तो के भी इमाम बन गये, इस से अल्लाह ने बता दिया के ऐ मेरे महबूब

मेरी सब मखलुक के इमाम हे.

{5} जब हुजुरﷺ ने कूफ्फारे मक्का से बात चीत की थी तो उन्होने (काफीरो) क्लीमा ऐ तौहीद को छोडने के बदले आप के सामने दुनिया के माल व खजाने और हूस्न व खुबसुरती पेश की तो अल्लाह की रहमत जोश मे आयी के मेरे मेहबूब ये कूफ्फार आप के सामने दुनिया के माल व खजाने पेश करते हे, आप जरा मेरी तरफ आइये, मे आपको अपने खजनो की सेर करता हुं, के आपके रब ने आपके लिये केसे केसे खजानो को जमा कर रखा हे, तो अल्लाह ने अपने महबूब को अपने खजानो की सेर करादी तके कूफ्फार की ये बात गलत साबित हो जाये के दुनिया के पेसा बडी चीज हे, जो दुनिया से मुंह फेरता हे, अल्लाह उसे अपनी रहमतो के खजाने अता फरमाते हे, इस लिये अल्लाह ने अपने महबूब को मेराज की सआदत अता फरमाई.

{6} ऐक मरतबा जब कूफ्फारे मक्का ने हुजुरﷺ को सख्त तकलीफ पोहंचायी थी, तो आप ने ये कहा था के, कोई दोस्त होता जो मेरा साथ देता, कोई रफीक होता जो मेरी गमख्वारी व दिलदारी करता, तो अल्लाह ने

अपने महबूब को अर्स पर बूलवा कर आप की दिलदारी और गमख्वारी फरमाई के, दुनिया ने तो आप को तकलीफे दी हे, आइये मे आपके दिल को खुशिया दे दु, और आपके दिल को सुकून अता कर दु, इसलिये के मे ही आपका रफीके आला और आपका दोस्त हुं.

{7} हजरत इसाअल को अल्लाह ने अर्स पर बूलाया और चोथे आसमान के उपर उनका क्याम फरमादिया, हो सकता हे के इसईयो के दिल मे ये बात हो के हमारे नबी बडे अफजल हे, उनको आसमानो के उपर उठया गया और चोथे आसमान पर उनका क्याम हे, अल्लाह ने उनका फखर तोडने के लिये अपने महबूब को मेराज अता फरमादी के ओ नसारा तुम देखो अगर तुमहारे नबी को चोथे आसमान तक उठाया गया, तो मे अपने महबूब को चोथे आसमान से भी उपर उठा लेता हुं.

{8} दुनिया मे जीतनी भी मखलुक हे सब अल्लाह की तारीफ बिन देखे कर रहे थे, कोई ऐसा भी हो जो देख कर तारीफ करने वाला हो, इस मकसद के लिये अल्लाह ने अपने महबूब को बूला लिया के मेरे महबूब सारी दुनिया तो बिन देखे मेरी तारीफ करती हे, मे

आपको वह मकाम अता करता हुं जहा मेरी निशानियो को देख के और मुजे (अल्लाह) को देख कर आप मेरी तारीफ कर सके.

{9} दुनिया का कानुन हे के जब बादशाह किसी अपने दोस्त को बूलाता हे तो अपने मेहलो की सेर कराता हे, अपने खजाने दिखाता हे, अपने दरबार मे बूलाता हे, अल्लाह ने अपने महबूब को अपना कूरबे खास अता फरमाया तो उनको अर्शो कलम से उपर बूला लिया, और अपने मकामात व खजानो की सेर करवा दी, मेरे दोस्त दुनिया मे अगर अपने दोस्तो को खाजाने दिखाये जाते हे, तो मे तो हकीकी शेहेन्शाह हुं, आइये मे भी अपने खजानो का आपको दीदार करवा फेता हुं, ताके दुनिया वालो को ये यकीन आजाये के हकीकत मे मेने आप को अपना महबूब बना लिया हे.

{10} अल्लाह के महबूब कयामत के दिन मखलुक की शिफाअत सिफारिश करने वाले हे, इसी लिये तो शाफी ऐ रोजे ज्जा कहा जता हे, इस लिये जब अजान के बाद दुआ मांगी जती हे तो उसमे कहा जता हे के,

ऐ अल्लाह हमे हुजुरﷺ की शिफाअत अता फरमाना, और आपको मकामे महमुद अता फरमा, कयामत के दिन जब सारी ईन्सानियत परेशान होगी, और सब के सब इन्सान मुखतलिफ अमबीयाअल के पास जायेंगे, मगर सब अल्लाह की ज्लालते शान से कांपते होंगे, ऐसे वक्त मे सब मेरी (हुजुर) तरफ आयेंगे, और अल्लाह की तरफ से मुजे वह मकामे महमुद मिलेगा, मे वहा सजदे मे सर रख कर अल्लाह की ऐसी तारीफ करूंगा के न उस से पेहले किसी ने ऐसी तारीफ की होगी और न बाद मे कोई करेगा, वह तारीफ ऐसी होगी के अल्लाह का सारा जलाल, जमाल (रहमत) मे बदल जायेगा, अल्लाह की रहमत जोश मे आयेगी फरमायेगें, सजदे से सर उथाइये, जिसकी आप शिफाअत करेंगे हम आप की शिफाअत कबूल करेंगे, तो अल्लाह ने अपने महबूब को अर्स पर बूलाकर जन्नत और जहन्नम के मनाजीर दीखा दिये, ताके लोगो की शिफाअत करने मे महबूब को आसानी हो सके, अगर पेहली बार मे इन्सान ने कोई चीज देखी हो तो परेशान होता हे, के क्यां करू? और क्यां कहुं? तो अल्लाह ने अपने महबूब को जन्नत व जहन्नम की सेर इस लिये करवा दी ताके महबूब को मालुम रहे के

जन्नतियो व जहन्नमियो के साथ क्या मामला होगा, और कयामत के दिन शिफाअत का हक अदा कर सके. अल्लाह के महबूब ने फरमाया के अल्लाह ने हर नबी को ऐक ऐसी दुआ का ईख्तियार दिया हे के तुम जेसे मांगोगे, उस दुआ को उसी तरह कबूल कर लिया जायेगा, जब आपﷺ ने ये बात फरमाई तो सहाबारज़ी तडप उठे, पूछते हे, ऐ अल्लाह के मेहबूबﷺ अल्लाह ने आप को भी ईख्तियार दिया हे, फरमाया हा अर्ज किया, अल्लाह के मेहबूबﷺ फिर आप ने कोन्सी दुआ मांगी? फरमाया मेने कोई दुआ नही मांगी, मेने उस दुआ को जखीरा बना लिया हे, कयामत के दिन मेरी गुनेहगार उम्मत खडी होगी, मे उस वक्त दुआ करूंगा, ऐ परवरदिगार मेरी सारी उम्मत को आज अपनी रहमत से जन्नत मे दाखिल करदे, फरमाया: मे उस वक्त तक जन्नत मे नही जाउंगा जब तक मेरा आखरी उम्मती भी जन्नत से बाहर होगा, जब सारी उम्मत अंदर चली जायेगी फिर मे जन्नत मे दाखिल होउंगा, मे कयामत के दिन वह दुआ करूंगा, और अल्लाह मेरी दुआ के बदले मे मेरी गुनेहगार उम्मत की मगफिरत फरमादेंगे. (सुबहानाल्लाह)
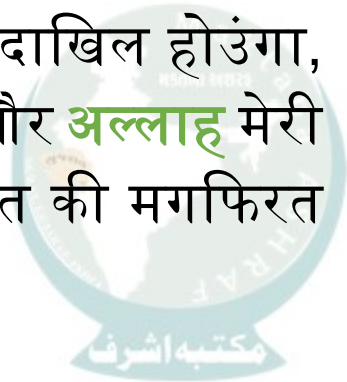
{11} **अल्लाह** ने अपने महबूब को मेराज पर बूलाया उसमे ऐक हिकमत ये भी थी के **अल्लाह** को अपने महबूब पर कयामत के दिन के सब हालात खोलने थे, तो **अल्लाह** ने अपने महबूब को अर्स पर बूलवाया, और अपनी रहमत के खजाने दीखा दिये ताके मेरे महबूब को मेरे खजाने देखने की सआदत मिल जाये, ऐसा न हो के, अगर आप पर मेरे उम्मत के गुनहगारो को पेश किया जाये, तो आप का दिल न दुखे के मेरी उम्मत के इतने गुनाह हे, केसे बखशे जायेंगे, इसलिये **अल्लाह** ने अपने महबूब को रहमत के खाजने दिखा दिये के मेरे मेहबूब तेरी उम्मत के गुनाह जीतने भी जीयादा हो, जरा मेरी रहमतो को भी देखलो, वह इन रहमतो से जीयादा नही हो सकते, मेरी रहमते उन तमाम गुनाहो से जीयादा होंगी, ताके मेरे महबूब के दिल को उम्मत के गुनाहो को जान कर तकलीफ न हो.

{12} कूछ उलमा ने ये हिकमत भी लिखी हे के ऐक मरतबा जमीन और आसमान के दरमियान बात चीत हूवी, आसमान ने कहा: मेरे उपर चांद और सितारे हे, जमीन ने कहा: मेरे उपर **हुजुर**ﷺ के सहाबा हे, आसमान ने कहा: मेरे उपर **अल्लाह** की रहमत के

खजाने हे, जमीन ने कहा: मेरे उपर **हुजुर**ﷺ की रहमत का मदीना हे, आसमान ने कहा: मेरे उपर मुकद्दस मकामात हे, जमीन ने कहा: मेरे उपर तुर, मक्का, मदीना जेसे मकामात हे, आखिर मे जमीन ने कहा आछा तेरे उपर जो कूछ भी हे, मगर तेरे उपर **अल्लाह** के महबूबﷺ तो नही हे, ये सआदत तो **अल्लाह** ने मुजे ही अता की हे, जब जमीन ने कहा तो आसमान के पास इसका कोई जवाब नही था, **अल्लाह** की रहमत ने ये चाहा के अगर जमीन को ये सआदत मिली हे के, मेरे महबूब के कदमउस पर लगे हे, तो मे अपने महबूब के कदमो को अर्स पर भी लगवा देता हुं, ताके सआदत मे दोनो बराबर हो जाये, तो **अल्लाह** ने अपने महबूब को मेराज अता फरमाई.